शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2019
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सम्पादकीय

अपरिग्रह

विनोबा

'अत्यंत अपरिग्रह' यह जैनधर्म की बहुत बड़ी विशेषता है ऐसा मैं मानता हूं। लेकिन यह अपरिग्रह का सिद्धांत जैनों को सधा नहीं है। असंग्रह का सिद्धांत उनके अमल में आता हुआ दीखता नहीं। मालूम नहीं मुझे, जैनों से ज्यादा परिग्रही कौन होंगे ? इस विषय में आचार्य तुलसी ने गृहस्थों के लिए अणुव्रत बताये हैं। गृहस्थों के लिए परिग्रह की मर्यादा मानी गयी है। गृहस्थ का परिग्रह खड़ा होता है, तो उसकी मर्यादा कैसे प्राप्त करना, उस बारे में आचार्य तुलसी ने कुछ बताया है। उन मर्यादाओं का पालन भी अगर जैन समाज करे तो भी उनकी बहुत उन्नति होगी। महावीर का ध्यान करके मैं आशा करूंगा, इस कमी से मुक्त होने की कोशिश जैन लोग करेंगे।

पवापुरी जैने तीर्थंकर महावीर स्वामी की देहसमाप्ति का स्थान है। ऐसे स्थानों पर स्वाभाविक ही मन अंतर्मुख होता है और शुभ भावनाएं उमड़ आती हैं। लेकिन वैसी वे न उमड़ें इसलिए भक्तजन पक्का बंदोबस्त करके रखते हैं, यद्यपि वे उसमें पूर्ण सफल नहीं होते। महावीर का मृत्यु स्थल और दहनस्थान ऐसे दो अलग-अलग स्थान दिखाते हैं। दहनस्थली पर एक मंदिर बनाया गया है और उसके चारों ओर कमलों से सुशोभित सरोवर है। एक मंदिर में महावीर स्वामी की दिंगबर मूर्ति है। वहां हमें ले गये। हमें जेल की याद आ गयी। लोहे फाटक खोलकर अंदर एक दालान, फिर दूसरा लोहे का दरवाजा खोला तो फिर एक दालान। ऐसे करते-करते अंत में कमरे का लोहे का दरवाजा खोलकर नग्न मूर्ति का दर्शन करवाया गया। जो सारी दुनिया में दिगंबर घूमा, शीतादि से रक्षा के लिए वस्त्र पहनना भी उचित नहीं माना, ऐस महापुरुष के दर्शन के लिए जब हमें ले गये तब द्वार बंद थे और संतरी बंदूक लेकर खड़े थे। उसको भक्तों ने सदा के लिए कैद कर रखा है।

जो मुक्तात्मा सारे बिहार में निःसंकोच और निर्भयता से जंगल-जंगल घूमते थे उन्हें इस तरह कैद क्यों करना पड़ा ? इसलिए कि वहां बहुत-सा सुवर्णमय श्रृंगार था। महावरी स्वामी सुवर्ण का परिग्रह पसंद नहीं करते थे। लेकिन उनके शिष्य उनकी करुणा के कायल थे, परंतु सुवर्ण की प्रतिष्ठा भी नहीं छोड़ सकते थे। क्योंकि वे मानते थे कि दुनिया में सुवर्ण का साम्राज्य है। यानी हम महावीर भी चाहते हैं और सुवर्ण भी। दोनों में हमारी एक-सी निष्ठा है। दोनों का विरोध हम देख नहीं सकते। और इसलिए वहां बंदूकवाला खड़ा करना पड़ता है। हमने वहां महावीर की मूर्ति का दर्शन किया, तो हमें ऐसा लगा कि मूर्ति के आंखों में आंसू हैं। हम ज्यादा देर वहां खड़े नहीं रह सके। अत्यंत खिन्न होकर लौट आये। गये थे महापुरुष के दर्शन करने के लिए, लेकिन दर्शन हुआ हमारे दुर्दैव का!

विनोबा साहित्य खण्ड 7